Maharaja Surajmal Brij University
Bharatpur (Raj.)

SYLLABUS

M.A. -Hindi (Literature)

SEMESTER : I & II

EXAMINATION : 2025-26

As per NEP-2020

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अकादमिक प्रथम

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम में चार सेमेस्टर हैं। प्रत्येक वर्ष में दो सेमेस्टर हैं। प्रत्येक सेमेस्टर 24 क्रेडिट का है। क्रेडिट को कम्पलसरी कोर कोर्स (मुख्य पाठ्यक्रम पेपर) और इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्न पत्र) श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

प्रत्येक सेमेस्टर के प्रत्येक पेपर में आन्तरिक मूल्यांकन : 20 अंक का तथा EOSE(सेमेस्टर के अंत की परीक्षा) 80 अंक का है। दोनों ही वर्गों में न्यूनतम उत्तीर्ण अंक 40% होने चाहिए।

Details of Course Structure

Semester-I

Paper S.No.	Subject Paper Code	Course Title or Paper Name	Course Category	Course Credits
1.	HIN-10101-T प्रथम प्रश्न पत्र	हिन्दी साहित्य का इतिहास–आदिकाल	CC	4
2.	HIN - 10102-T द्वितीय प्रश्न पत्र	हिन्दी साहित्य का आदिकाव्य	CC	4
3.	HIN - 10103-T तृतीय प्रश्न पत्र	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	CC	4
4.	HIN - 10104-T चतुर्थ प्रश्न पत्र **अथवा**	सूफी साहित्य **अथवा**	DCE **अथवा**	4 **अथवा**
	HIN - 10105-T चतुर्थ प्रश्न पत्र	लोक साहित्य	DCE	4
5.	HIN - 10106-T पंचम प्रश्न पत्र **अथवा**	सूरदास **अथवा**	DCE **अथवा**	4 **अथवा**
	HIN - 10107-T पंचम प्रश्न पत्र	तुलसीदास	DCE	4
6.	SEC -10108-T	Skill Enhancement Course	SEC	4

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अकादमिक प्रथम

Details of Course Struture

Semester-II

Paper S.No.	Subject Paper Code	Course Title or Paper Name	Course Category	Course Credits
1.	HIN-10201-T प्रथम प्रश्न पत्र	हिन्दी साहित्य का भक्तिकाव्य	CCC	4
2.	HIN-10202-T द्वितीय प्रश्न पत्र	भारतीय काव्यशास्त्र	CCC	4
3.	HIN-10203-T-EC तृतीय प्रश्न पत्र अथवा	हिन्दी साहित्य का इतिहास– भक्तिकाल अथवा	CE अथवा	4 अथवा
	HIN-10204-T-EC तृतीय प्रश्न पत्र	राजस्थान के प्रमुख संत कवि	CE	4
4.	HIN-10205-T-EC चतुर्थ प्रश्न पत्र अथवा	मीराँ अथवा	CE अथवा	4 अथवा
	HIN-10206-T-EC चतुर्थ प्रश्न पत्र	रसखान	CE	4
5.	IRM-10207-T	Introduction to Research Methodology	IRM	4
6.	IEC-10208-T	Interdisciplinary Elective Course	IEC	4

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अकादमिक प्रथम

SEMESTER-I

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अकादमिक प्रथम

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

प्रथम सेमेस्टर

कम्पलसरी कोर कोर्स

HIN-10101-T : प्रथम प्रश्न पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास–आदिकाल

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

समय 3 घण्टे

EOSE : 80 अंक

निर्धारित पाठ–

इकाई 1. साहित्य का इतिहास दर्शन, साहित्येतिहास और साहित्यालोचन, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ

इकाई 2. हिन्दी साहित्य का आदिकाल –सीमांकन, नामकरण, परिवेश

आदिकाल के अध्ययन की समस्याएँ –साहित्यिकता, भाषा एवं प्रामाणिकता के प्रश्न

इकाई 3. आदिकालीन साहित्य की प्रमुख धाराएँ

क. सिद्ध साहित्य

ख. नाथ साहित्य

ग. जैन साहित्य

घ. रासो साहित्य

इकाई 4. आदिकालीन साहित्य के अन्य पक्ष

क. लौकिक साहित्य

ख. गद्य साहित्य

ग. आदिकाल की उपलब्धियाँ (भाषा रूप और सम्प्रेषण क्षमता, कथ्य और शिल्प)

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न

प्रत्येक इकाई से एक आलोचनात्मक प्रश्न –चार प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) 16×4 = 64 अंक

अंतिम प्रश्न टिप्पणीपरक होगा –दो टिप्पणियाँ, किसी भी इकाई से दे सकते हैं। 8×2 = 16 अंक

(आन्तरिक विकल्प देय)

अनुशंसित ग्रंथ–

1. राम चन्द्र शुक्ल –हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी –हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी –हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अकादमिक प्रथम

4. हजारी प्रसाद द्विवेदी –हिन्दी साहित्य का आदिकाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र –हिन्दी साहित्य का अतीत –भाग 1 वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. नगेन्द्र (सं.) –हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
7. रामस्वरूप चतुर्वेदी –हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. नलिन विलोचन शर्मा –साहित्य का इतिहास दर्शन, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
9. बच्चन सिंह –हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
10. शंभुनाथ पाण्डेय –आदिकालीन हिन्दी साहित्य
11. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय–गोरखनाथ : नाथसम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में
12. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय– बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य

अधिगम उद्देश्य–

1. इतिहास के आदिकाल के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक परिवेश का ज्ञान करना।
2. आदिकाल के साहित्यिक काव्य रूपों को जानना।
3. आदिकाल की साहित्यिक धाराओं का सामान्य ज्ञान प्राप्त करना।
4. हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रारम्भ को समझना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल–

1. साहित्येतिहासिक दर्शन, परम्परा और चुनौतियों को जान सकेंगे।
2. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के अध्ययन के प्रमुख बिन्दुओं को समझ सकेंगे।
3. आदिकाल की प्रमुख धाराओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
4. आदिकाल के गद्य और लोक साहित्य को जान सकेंगे।

(प्रो. कुमार डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अकादमिक प्रथम

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

प्रथम सेमेस्टर

कम्पलसरी कोर कोर्स

HIN-10102-T : द्वितीय प्रश्न पत्र

हिन्दी साहित्य का आदिकाव्य

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

समय 3 घण्टे

EOSE : 80 अंक

निर्धारित पाठ–

इकाई 1 चन्दबरदाई – **संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो**– सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी– शशिव्रता विवाह प्रस्ताव– आरम्भिक 50 छन्द

इकाई 2 –विद्यापति – **विद्यापति**– सं. शिवप्रसाद सिंह (विद्यापति–गीतिका)

– पदसंख्या 8, 10, 11, 16, 19, 25, 36, 40, 47, 48

इकाई 3 –ढोला मारू रा दूहा – सं. डॉ. शम्भूसिंह मनोहर–दोहा संख्या 1 से 25 तक

इकाई 4 –गोरखनाथ – **गोरख–बानी**– सं. डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल– सबदी खण्ड के आरम्भिक 15 छन्द, पद खण्ड से आरम्भिक 5 छन्द

अंक विभाजन–

चार व्याख्या –प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय)	8X4 = 32 अंक
चार आलोचनात्मक प्रश्न –प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय)	12X4 = 48 अंक

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी साहित्य का आदिकाल –हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. हिन्दी साहित्य की भूमिका –हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. आदिकालीन हिन्दी साहित्य –डॉ. शम्भूनाथ पाण्डेय
4. चंदबरदाई –शांता सिंह
5. पृथ्वीराज रासो भाषा और साहित्य –डॉ. नामवर सिंह
6. पृथ्वीराज रासउ –सं. माताप्रसाद गुप्त
7. विद्यापति –डॉ. शिवप्रसाद सिंह
8. विद्यापति –डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अकादमिक प्रथम

9. गोरखनाथ –नागेन्द्रनाथ उपाध्याय

10. ढोला मारू रा दूहा – सं. रामसिंह, सूर्यकरण पारीक, नरोत्तमदास स्वामी

अधिगम उद्देश्य

1. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के काव्य से परिचित होना।
2. पृथ्वीराज रासो के पाठ के जरिए रासो काव्य की विशेषता आदि का अध्ययन करना।
3. विद्यापति के काव्य की विशेषताओं का अध्ययन करना।
4. ढोला मारू रा दूहा के चयनित पाठ से आदिकाल के लोक काव्य की विशेषताओं का अध्ययन करना।
5. गोरख–बानी के अध्ययन से निर्गुण संत काव्य की आधार भूमि का ज्ञान करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के काव्य से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
2. रासो काव्य की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन विद्यार्थी पृथ्वीराज रासो के चयनित पाठ के आधार पर कर सकेंगे।
3. विद्यापति पदावली के चयनित पाठ से विद्यार्थी विद्यापति की काव्यगत विशेषताओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
4. आदिकाल के लोक काव्य की विशेषताओं का अध्ययन 'ढोला मारू रा दूहा के चयनित अंश से किया जा सकेगा।
5. गोरख–बानी के अध्ययन से विद्यार्थी गोरखनाथ की साधना, विचार और पद्धति के साथ–साथ निर्गुण संत काव्य की आधार भूमि को समझ सकेंगे।

(प्रो. डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अकादमिक प्रथम

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

प्रथम सेमेस्टर

कम्पलसरी कोर कोर्स

HIN-10103-T : तृतीय प्रश्न पत्र

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

समय 3 घण्टे EOSE : 80 अंक

इकाई 1. क. भाषा : परिभाषा, विशेषताएँ, भाषा और बोली, भाषा परिवर्तन के कारण

ख. भाषाविज्ञान : परिभाषा, अंग, भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं से संबंध

इकाई 2. क. स्वनिमविज्ञान : स्वन की परिभाषा वागीन्द्रियाँ, स्वनों का वर्गीकरण – स्थान और प्रयत्न के आधार पर, स्वन परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ

ख. रूप विज्ञान : शब्द और रूप (पद), पद विज्ञान – नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात व्याकरणिक कोटियाँ – लिंग, वचन, पुरुष, कारक, पद परिवर्तन के कारण

इकाई 3. क. वाक्यविज्ञान : वाक्य की परिभाषा, वाक्य के अनिवार्य तत्व, वाक्य के प्रकार, वाक्य परिवर्तन के कारण

ख. अर्थविज्ञान : शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएँ

इकाई 4. क. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास

ख. हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ

ग. राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी

घ. देवनागरी लिपि की विशेषताएँ और मानकीकरण, हिन्दी की मानक वर्णमाला

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न

प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न – चार प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) 16X4 = 64 अंक

अंतिम प्रश्न टिप्पणीपरक होगा – दो टिप्पणियाँ, किसी भी इकाई से दे सकते हैं। 8X2 = 16 अंक (आन्तरिक विकल्प देय)

अनुशंसित ग्रंथ–

1. भाषाविज्ञान की भूमिका – देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली

2. भाषाविज्ञान – भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद

प्रभारी अकादमिक प्रथम

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

3. सामान्य भाषाविज्ञान – बाबूराम सक्सेना, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
4. हिन्दी भाषा का उद्‌गम और विकास – उदयनारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. भाषा और समाज – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. पुरानी हिन्दी – चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
7. हिन्दी शब्दानुशासन – किशोरीदास वाजपेयी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
8. भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी – सुनीति कुमार चटर्जी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र – कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
10. हिन्दी भाषा विकास और स्वरूप – कैलाश चन्द्र भाटिया, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली

अधिगम उद्देश्यः–

1. भाषा विज्ञान व उसके विविध अंगों और शाखाओं को स्पष्ट करना।
2. भाषा–व्यवस्था, संरचना, भाषिक प्रकार्य तथा उसकी विशेषताओं को स्पष्ट करना।
3. स्वनिमविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान की परिभाषा व उनके भेदों को स्पष्ट करना।
4. हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास, हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ, राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा तथा देवनागरी लिपि का मानकीकरण एवं मानक वर्णमाला का परिचय करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. विद्यार्थी भाषा, भाषा व्यवस्था, संरचना, भाषिक प्रकार्य तथा उसकी विशेषताओं की सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी भाषाविज्ञान की परिभाषा उसके प्रमुख अंग और भाषाविज्ञान की ज्ञान की अन्य शाखाओं से संबंध को समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थी हिन्दी की ध्वनियों तथा वर्गीकरण और ध्वनि परिवर्तन के कारणों को समझ सकेंगे।
4. स्वनिमविज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान की परिभाषा एवं उनकी उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
5. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के उद्‌भव और विकास, हिन्दी की उपभाषाएँ, बोलियाँ, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा एवं देवनागरी लिपि एवं हिन्दी की मानक वर्णमाला का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अधिकारी

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

प्रथम सेमेस्टर

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्न पत्र)

HIN-10104-T एवं HIN-10105-T में से किसी एक का चयन करें

HIN-10104-T : चतुर्थ प्रश्न पत्र

सूफी साहित्य

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

समय 3 घण्टे EOSE : 80 अंक

इकाई 1. सूफी मत का उद्भव और विकास, सूफी मत का सैद्धान्तिक विश्लेषण

इकाई 2. भारत में सूफी मत का विकास एवं विविध सम्प्रदाय

इकाई 3. हिन्दी का सूफी साहित्य, सामान्य विशेषताएँ

इकाई 4. निर्धारित पाठ–

क. जायसी ग्रंथावली – सं. रामचन्द्र शुक्ल, (पद्मावत–नागमती–वियोग खण्ड)

ख. मधुमालती (मंझन) – सं. माता प्रसाद गुप्त, 316 से 330 तक

ग. अमीर खुसरो – सं. भोलानाथ तिवारी

गीत – 1. मेरा जोवना नवेलरा भयो है गुलाल।

2. बहुत रही बाबुल घर दुलहिन, चल, तेरे पी ने बुलाई।

3. दइआ री मोहे भिजोया री।

4. अम्मा मेरे बाबा को भेजो जी कि सावन आया।

5. जो पिया आवन कह गये, अजहुँ न आए स्वामी हो।

सूफी दोहे –1. गोरी सोवै सेज पर मुख पर.....

2. खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संग....

3. श्याम सेत गोरी लिये जनमत भई अनीत....

4. वो गए बालम वो गए नदियो किनार।

5. देख मैं अपने हाल को रोउँ जार–ओ–जार....

6. चकवा चकवी दो जने उनको मारे न कोय....

7. सेज सूनी देख के रोउँ दिन–रैन....

8. ताजी खूटा देस में क़सबे पड़ी पुकार...

प्रभारी अकादमिक प्रथम

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

अंक विभाजन–

आरम्भिक तीन इकाइयों से एक–एक आलोचनात्मक प्रश्न – कुल तीन प्रश्न 16X3 = 48 अंक

(आन्तरिक विकल्प देय)

चतुर्थ इकाई से 4 व्याख्याएँ–निर्धारित पाठ इकाई क, ख, ग, में से न्यूनतम एक व्याख्या 8X4 = 32 अंक एवं चतुर्थ व्याख्या निर्धारित पाठों में से कहीं से भी दे सकते हैं। (आन्तरिक विकल्प देय)

अनुशंसित ग्रंथ–

1. जायसी ग्रंथावली – सं. रामचन्द्र शुक्ल
2. पद्मावत – सं. वासुदेवशरण अग्रवाल
3. जायसी – विजयदेवनारायण साही
4. मधुमालती – डॉ. शिवगोपाल मिश्र
5. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका – रामपूजन तिवारी
6. जायसी के परवर्ती हिन्दी सूफी कवि और काव्य – डॉ. सरला शुक्ल
7. सूफी मत – डॉ. कन्हैया सिंह
8. मध्ययुगीन प्रेमाख्यान – डॉ. श्याम मनोहर पाण्डेय
9. अमीर खुसरो हिन्दी लोक काव्य संकलन – गोपीचन्द नारंग, अनुवाद मोहम्मद मूसा रज़ा
10. सूफी मत और हिन्दी सूफी काव्य – डॉ. नरेश
11. हिन्दी संतकाव्य–संग्रह – सं. श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी

अधिगम उद्देश्यः–

1. सूफी मत के उदय और विकास का परिचय।
2. सूफी सिद्धान्तों का सामान्य परिचय।
3. भारत में सूफी मत के विभिन्न संप्रदायों का परिचय।
4. हिन्दी के सूफी साहित्य के विकास विशेषताओं का परिचय।
5. सूफी साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकारों के रूप में जायसी, मंझन और अमीर खुसरो के काव्य का अवबोध करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. विद्यार्थी सूफी मत के उदय और विकास का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी सूफी सिद्धान्तों का परिचय प्राप्त कर सूफी साहित्य की समझ को बेहतर बना सकेंगे।
3. भारत में सूफीमत के विकास और विभिन्न संप्रदायों का परिचय प्राप्त कर विद्यार्थी भक्तिकाल की निर्गुण प्रेममार्गी काव्यधारा को समझ सकेंगे।
4. हिन्दी के सूफी साहित्य की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त कर उनके प्रतिनिधि कवियों के रूप में जायसी, मंझन और अमीर खुसरो के काव्य से परिचित हो सकेंगे।

प्रभारी अकादमिक प्रथम

(प्रो० डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

प्रथम सेमेस्टर

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्न पत्र)

HIN-10104-T एवं HIN-10105-T में से किसी एक का चयन करें

HIN-10105-T : चतुर्थ प्रश्न पत्र

लोक साहित्य

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

EOSE : 80 अंक

समय 3 घण्टे

इकाई 1. 1. लोक साहित्य की अवधारणा

2. लोक साहित्य और लोक संस्कृति का अन्तर्संबंध

3. लोक साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध

4. लोक साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ

इकाई 2. 1. लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण

2. लोक गीत – संस्कारगीत, व्रतगीत, श्रमगीत, ऋतुगीत

3. लोक गाथा एवं लोक कथा

4. लोक नृत्य एवं लोक नाट्य

इकाई 3. 1. लोक नाट्य – रामलीला, रासलीला, कीर्तनियाँ, स्वांग, यक्षगान, विदेशिया, भांड, तमाशा, नौटंकी

2. राजस्थान के लोकनाट्य एवं परम्परा

3. लोक नाट्य परम्परा में गीत

इकाई 4. 1. हिन्दी लोक नाट्य की परम्परा

2. हिन्दी नाटक एवं रंगमंच पर लोक नाट्यों का प्रभाव

3. लोक नाट्य का सांस्कृतिक संरक्षण

4. लोक नाट्य शैली

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न

प्रत्येक इकाई से एक आलोचनात्मक प्रश्न – कुल चार प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) 16×4 = 64 अंक

अंतिम प्रश्न टिप्पणीपरक होगा। किसी भी इकाई से – दो टिप्पणियाँ 8×2 = 16 अंक

(आन्तरिक विकल्प देय)

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

अनुशंसित ग्रंथ—

1. बद्रीनारायण – लोक संस्कृति में राष्ट्रवाद, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2. श्यामाचरण दुबे – परम्परा, इतिहास बोध और संस्कृति, राधाकृष्णन, नई दिल्ली
3. डॉ. सत्येन्द्र – लोक साहित्य विज्ञान, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
4. अर्नाल्ड हाउजर – कला का इतिहास दर्शन, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली
5. कुंदनलाल उप्रेती – लोक साहित्य के प्रतिमान, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़
6. डॉ. श्रीराम शर्मा – लोक साहित्य सिद्धान्त प्रयोग, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
7. डॉ. रवीन्द्र भ्रमर – लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य सदन, कानपुर
8. डॉ. दुर्गा भागवत – भारतीय लोक साहित्य की रूपरेखा, विभु प्रकाशन, दिल्ली
9. दिनेश्वर प्रसाद – लोक साहित्य और संस्कृति, लोकभारती, इलाहाबाद
10. लोकावलोकन – विजय वर्मा, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
11. सम्मेलन पत्रिका – लोक संस्कृति विशेषांक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद
12. सापेक्ष – लोक साहित्य विशेषांक, सं. महावीर अग्रवाल दुर्ग
13. ब्रज के लोकगीत – राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर
14. डॉ. रेणु वर्मा – नागरचाल लोक साहित्य और संस्कृति, गौतम बुक कम्पनी, जयपुर

अधिगम उद्देश्यः—

1. लोक साहित्य और लोक संस्कृति की अवधारणा का परिचय देना।
2. लोक साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध का अध्ययन करना।
3. लोक साहित्य के अध्ययन की समस्याओं को जानना।
4. लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण और परिचय करना।
5. लोकनाट्य का परिचय, शैली, सांस्कृतिक संरक्षण एवं हिन्दी की लोकनाट्य परम्परा का अध्ययन करना।
6. हिन्दी नाट्य एवं रंगमंच पर लोकनाट्यों के प्रभाव का अध्ययन करना।
7. राजस्थान के लोक नाट्य परम्परा से अवगत करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफलः—

1. विद्यार्थी लोक साहित्य और लोक संस्कृति की अवधारणा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी लोक साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध का अध्ययन कर सकेंगे।
3. लोक साहित्य के अध्ययन की समस्याओं से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
4. लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण और परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
5. विद्यार्थी लोक नाट्यों एवं हिन्दी की लोक नाट्य परम्परा, शैली, सांस्कृतिक संरक्षण को समझ सकेंगे।
6. विद्यार्थी हिन्दी नाटक एवं रंगमंच पर लोक नाट्यों के प्रभाव का अध्ययन कर सकेंगे।
7. राजस्थान के लोक नाट्य परम्परा से परिचित हो सकेंगे।

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

प्रथम सेमेस्टर

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्न पत्र)

HIN-10106-T एवं HIN-10107-T में से किसी एक का चयन करें

HIN-10106-T : पंचम प्रश्न पत्र

सूरदास

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

EOSE : 80 अंक

समय 3 घण्टे

इकाई 1. **सूर पंचरत्न** – सं. लाला भगवानदीन

"पहला रत्न" (विनय) पद – 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11, 12, 14, 16, 17, 22, 26, 27, 33, 34, 36, 38, 39, 40, 42, 45, 46, 49, 50, 63, 65, 83, 84, 91, 92, 97, 108

इकाई 2. **भ्रमरगीत सार** – सं. रामचन्द्र शुक्ल

पद – 7, 8, 9, 10, 15 एवं पद संख्या 21 से 50 तक

इकाई 3. **साहित्य लहरी** – पद – 1. राधे कियो कौन सुभाव। 2. हरि उर पलक धारो धीर। 3. आज अकेली कुंजभवन में बैठी बाल बिसूरत। 4. सारंग सम कर नीक–नीक सम सारंग सरस बखाने। 5. लखि बृजचन्द चन्द मुख राधे। 6. सुरभी रस रातो नंदनंदन सुरभी रस जिन रातो। 7. गृह तें चली गोपकुमारि। 8. बीथिन मिलो नन्दकुमार। 9. सिलीमुष सारंग निहारन करो कौन उपाई। 10. मानिन अजहूँ मान बिसारो। 11. निस दिन पंथ जोहत जाइ। 12. सखी री सुन परदेसी की बात। 13. बीती जामिनी जुग चार। 14. राधे कैसे प्रान बचावै। 15. प्राननाथ तुम बिन बृजबाला ह्वै गई सबै अनाथ। 16. अब रथ देख परत न धूर। 17. बन ते आज नन्दकिशोर। 18. मोहन मो मन बसि गौ माई। 19. मानिन तजो नाहीं मान। 20. हौं जल गई जमुना लेन। 21. सोवत थी मैं सजनी आज। 22. कूदौ कालीदह में कान। 23. सुन सुन नन्दनन्दन की रीति। 24. जलज नीतन हौं आज निहारो। 25. सजनी हौं न एक पहिचानो। (कुल 25 पद)

इकाई 4. **सूर–सारावली** – सं. प्रभुदयाल मीतल, अग्रवाल प्रेस, मथुरा।

पद – वंदौ श्री हरि–पद सुखदाई।

चौबीस अवतार भाग के 19 वें "राम अवतार" – छंद सं. 140 से 316 तक

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएँ – प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय) 8×4 = 32 अंक

सूरदास की भक्ति, दर्शन, जीवन दृष्टि, काव्य कला आदि के वैशिष्ट्य पर केन्द्रित चार आलोचनात्मक प्रश्न, प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय) 12×4 = 48 अंक

(प्रोफेसर डा. अशोक कुमार गुप्ता)

अनुशंसित ग्रंथ–

1. सूरदास – सं. हरबंस लाल शर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
2. भ्रमरगीत सार – सं. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. भ्रमरगीत सार – सं. डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ
4. साहित्य लहरी – टीकाकार प्रभुदयाल मीतल, साहित्य संस्थान, मथुरा
5. सूरसारावली – सं. डॉ. मनमोहन गौतम, रीगल बुक डिपो, दिल्ली
6. साहित्य लहरी सटीक, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र संग्रहीत – सं. बाबू रामदीन सिंह, 'खड्गविलास' प्रेस, बांकीपुर
7. महाकवि सूरदास प्रणीत सूरसारावली – व्याख्याकार हरदत्त शर्मा 'सुधांशु',
8. महाकवि सूरदास प्रणीत साहित्य लहरी– व्याख्याकार डॉ. अर्जुन प्रसाद मिश्र, नरेश बुक डिपो, अलवर
9. सूर की भाषा – डॉ. प्रेमनारायण टंडन, साहित्य भण्डार, लखनऊ
10. सूरदास का काव्य वैभव – डॉ. मुंशीराम शर्मा, ग्रन्थम रामबाग, कानपुर
11. सूर साहित्य – डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
12. सूर विर्मश – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, साहित्य भवन, इलाहाबाद
13. सूरदास की वार्ता – प्रभुदयाल मीतल, साहित्य संस्थान, मथुरा
14. सूर की भक्ति भावना – डॉ. वेद प्रकाश शास्त्री, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
15. सूर सागर सटीक – सं. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन, प्रा.लि. इलाहाबाद
16. सूर सागर – सं. आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
17. सूर की काव्य माधुरी – डॉ. रमा शंकर तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद

अधिगम उद्देश्यः–

1. ब्रज साहित्य में सूर के महत्व का अध्ययन करना।
2. साहित्य की भ्रमरगीत परम्परा और इसमें सूरदास के स्थान से परिचित होना।
3. सूरदास की काव्य चेतना का सम्यक अनुशीलन करना।
4. सूरदास की काव्य शास्त्रीय प्रतिभा से अवगत होना।

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. विद्यार्थी ब्रज एवं हिन्दी साहित्य में सूरदास के महत्व को समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थी भ्रमरगीत परम्परा में सूरदास के स्थान को परख सकेंगे।
3. विद्यार्थी सूरदास की काव्य चेतना का सम्यक रूप से अध्ययन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से सूरदास के साहित्य का अध्ययन कर सकेंगे।

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

प्रथम सेमेस्टर

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्न पत्र)

HIN-10106-T एवं HIN-10107-T में से किसी एक का चयन करें

HIN-10107-T : पंचम प्रश्न पत्र

तुलसीदास

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

समयः 3 घण्टे

EOSE : 80 अंक

इकाई 1. **श्रीरामचरितमानस–अयोध्याकाण्ड (दोहा संख्या 67 से 90 तक) गीताप्रेस, गोरखपुर**

इकाई 2. **कवितावली (उत्तर काण्ड–15 छंद) छंद संख्या** 119, 122, 126, 132, 134, 136, 140, 141, 146, 153, 155, 161, 165, 182, 183 गीताप्रेस, गोरखपुर

इकाई 3. **गीतावली (बालकाण्ड (19 पद) पद संख्या** 7, 8, 9, 10, 24, 26, 31, 33, 36, 44, 73, 95, 97, 101, 104, 105, 106, 107, 110 गीताप्रेस, गोरखपुर

इकाई 4. **विनय पत्रिका (19) पद)** पद संख्या 1, 3, 17, 30, 36, 41, 45, 72,, 78, 79, 85, 89, 94, 98, 100, 101, 103, 104, 109 गीताप्रेस, गोरखपुर

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएँ – प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय) 8×4 = 32 अंक

तुलसीदास की भक्ति, दर्शन, जीवन दृष्टि, काव्य कला आदि के वैशिष्ट्य पर केन्द्रित चार आलोचनात्मक प्रश्न, प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय) 12×4 = 48 अंक

अनुशंसित ग्रंथ–

1. गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. मानस दर्शन – डॉ. श्रीकृष्णलाल, आनन्द पुस्तक भवन, काशी
3. तुलसी और उनका युग – डॉ. राजपति दीक्षित, ज्ञानमण्डल, काशी
4. रामकथा का विकास – कामिल बुल्के, हिन्दी परिषद्, प्रयाग
5. तुलसी : आधुनिक वातायन से – रमेश कुंतल मेघ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. परम्परा का मूल्यांकन – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. तुलसी काव्य मीमांसा – उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

8. लोकवादी तुलसीदास – विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
9. भक्तिकाल में भारतीय रहस्यवाद – राधेश्याम दुबे, संजय बुक सेन्टर, वाराणसी
10. तुलसी : एक पुनर्मूल्यांकन – सं. अजय तिवारी, आधार प्रकाशन, पंचकूला
11. मध्ययुगीन काव्य साधना – रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
12. विनय पत्रिका – वियोगी हरि, साहित्य–सेवा–सदन, वाराणसी
13. विनय पत्रिका – समीक्षक एवं भाष्यकार डॉ. हरिचरण शर्मा, श्याम प्रकाशन, जयपुर
14. तुलसी – सं. उदयभानु सिंह, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली
15. विनय पत्रिका की भाषा : रूप–वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ. अर्जुन प्रसाद मिश्र, देश भारती प्रकाशन, दिल्ली

अधिगम उद्देश्यः–

1. मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के राम केन्द्रित साहित्य का ज्ञान करना।
2. रामकाव्य धारा के सामंत विरोधी मूल्यों को समझना।
3. तुलसीदास के अवदान को रेखांकित करना।
4. अवधी एवं ब्रज भाषा की साहित्यिक उपलब्धियों को समझना।

पाठ्यक्रम प्रतिफलः–

1. तुलसी के सांस्कृतिक अवदान विशेषतः समन्वय को समझ सकेंगे।
2. मध्यकाल के विभिन्न काव्य रूपों को जान सकेंगे।
3. राम की मानवीय उदारता और अन्याय प्रतिरोध को समझ सकेंगे।
4. भक्ति और प्रेम की मनुष्य केन्द्रीयता को जान सकेंगे।
5. अवधी एवं ब्रज भाषा के साहित्यिक महत्व को जान सकेंगे।

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अधिकारी

SEMESTER-II

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

द्वितीय सेमेस्टर

कम्पलसरी कोर कोर्स

HIN-10201-T : प्रथम प्रश्न पत्र

हिन्दी साहित्य का भक्तिकाव्य

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

समय 3 घण्टे

EOSE : 80 अंक

पाठ्यांश :

इकाई 1. **कबीर–ग्रंथावली** – सं. श्याम सुन्दरदास

साखी

1. गुरदेव कौ अंग – 6, 7, 8, 12, 26
2. सुमिरण कौ अंग – 3, 4, 10, 12, 18
3. बिरह कौ अंग – 10, 11, 13, 27, 28
4. मन कौ अंग – 6, 7, 9, 10, 11
5. पदावली – पद – 1, 23, 24, 39, 55, 72

इकाई 2. **सूरदास : सूरसागर सार** – सं. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन, प्रा.लि., इलाहाबाद

गोकुल–लीला – 34, 35, 42

वृन्दावन लीला – 11, 16, 78

राधा–कृष्ण – 62, 70, 111

मथुरा गमन – 10, 38, 51

उद्धव संदेश – 9, 19, 66, 75, 77, 84, 102, 125, 130, 132, 141, 143, 156, 186, 187

इकाई 3. **तुलसीदास : विनय पत्रिका,** गीता प्रेस गोरखपुर

पद – 6, 73, 76, 84, 87, 88, 90, 91, 102, 125, 105, 111, 115, 124, 158, 159, 162, 171, 174, 185, 188, 198, 199, 201, 202, 245

इकाई 4. **रहीम ग्रंथावली** – सं. विद्यानिवास मिश्र, गोविन्द रजनीश, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

दोहावली – 4, 9, 15, 25, 28, 30, 58, 79, 89, 105

बरवै–नायिका–भेद– 11, 15, 17, 38, 48, 96, 97, 107 112, 115

फुटकर पद – 3, 5, 7, 12, 13

(प्रो. कुमार डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

अंक विभाजन–

व्याख्या कुल चार (आन्तरिक विकल्प देय) 8×4 = 32 अंक

आलोचनात्मक प्रश्न कुल चार (आन्तरिक विकल्प देय) 12×4 = 48 अंक

(भक्तिकाल के इतिहास से एवं निर्धारित इकाइयों से संबंधित प्रश्न पूछे जायेंगे)

व्याख्या और प्रश्न प्रत्येक इकाई से पूछा जाना अपेक्षित है।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग–एक) वाणी वितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी
4. रामस्वरूप चतुर्वेदी – हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती, इलाहाबाद
5. बच्चन सिंह – हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
6. मैनेजर पाण्डेय – साहित्य और इतिहास दृष्टि, पिपुल्स लिटरेसी, दिल्ली
7. त्रिभुवन सिंह – साहित्यिक निबंध
8. भक्ति काव्य और लोक जीवन – शिवकुमार मिश्र
9. भक्ति काव्य की भूमिका – प्रेमशंकर
10. नाथपंथ और संत साहित्य – डॉ. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय
11. हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति – डॉ. श्याम सुन्दर शुक्ल
12. कबीर वाङ्मय : सबद, साखी, रमैनी – डॉ. जयदेव सिंह, डॉ. वासुदेव सिंह
13. भये कबीर कबीर – डॉ. शुकदेव सिंह
14. कबीर एक नई दृष्टि – रघुवंश
15. रहीम ग्रंथावली – सं. विद्यानिवास मिश्र, गोविन्द रजनीश
16. रहीम रचनावली – सं. सत्यप्रकाश मिश्र, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
17. विनय पत्रिका की भाषा : रूप–वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ. अर्जुन प्रसाद मिश्र, देश भारती प्रकाशन, दिल्ली

अधिगम उद्देश्य

1. भक्ति आन्दोलन की निर्गुण–सगुण धाराओं का विस्तृत अध्ययन करना।
2. संत मत की प्रमुख विशेषताओं को समझना।
3. ब्रजभाषा की काव्य धाराओं के योगदान को रेखांकित करना।
4. रहीम व अन्य कवियों के परवर्ती साहित्य पर प्रभाव को समझना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. कबीर साहित्य का विस्तृत अध्ययन कर सकेंगे।
2. सूरदास की कविता के माध्यम से लीलाओं की महत्ता का आंकलन कर सकेंगे।
3. राम केन्द्रित साहित्य का भारतीय समाज के लिए योगदान को समझ सकेंगे।
4. भक्ति की लोक में उपस्थिति को चिह्नित कर सकेंगे।
5. रहीम की भक्ति, नीति के महत्व को समझ सकेंगे।

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

द्वितीय सेमेस्टर

कम्पलसरी कोर कोर्स

HIN-10202-T : द्वितीय प्रश्न पत्र

भारतीय काव्यशास्त्र

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

समय 3 घण्टे

EOSE : 80 अंक

पाठ्यांश :

इकाई 1.

1. काव्यशास्त्र का इतिहास – सामान्य परिचय।
2. काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन एवं साहित्य का स्वरूप।

इकाई 2.

1. रस सिद्धान्त – रस की अवधारणा, रस निष्पत्ति और साधारणीकरण
2. ध्वनि सिद्धान्त – ध्वनि की अवधारणा, ध्वनि का विचार स्रोत, ध्वनि का वर्गीकरण, ध्वनि सिद्धान्त का महत्व

इकाई 3.

1. अलंकार सिद्धान्त – अलंकार की अवधारणा, अलंकार और अलंकार्य, अलंकारों का वर्गीकरण, अलंकार सिद्धान्त एवं अन्य सम्प्रदाय
2. रीति सिद्धान्त – रीति की अवधारणा, रीति एवं गुण, रीति का वर्गीकरण

इकाई 4.

1. वक्रोक्ति सिद्धान्त – वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति का वर्गीकरण, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद, वक्रोक्ति का महत्व
2. औचित्य सिद्धान्त – औचित्य की अवधारणा, औचित्य का महत्व।

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न

प्रत्येक इकाई से एक आलोचनात्मक प्रश्न -- कुल चार (आन्तरिक विकल्प देय) 16×4 = 64 अंक

अंतिम प्रश्न टिप्पणी परक होगा। किसी भी इकाई से, दो टिप्पणियाँ 8×2 = 16 अंक
(आन्तरिक विकल्प देय)

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

अनुशंसित ग्रंथ–

1. काव्यशास्त्र – भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. रस सिद्धान्त – डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
3. भारतीय साहित्यशास्त्र – गणेश त्र्यंबक देशपांडे, पापुलर बुक डिपो, पूना
4. रसमीमांसा – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
5. संस्कृत आलोचना – बलदेव उपाध्याय
6. रस प्रक्रिया – शंकरदेव अवतरे, दिल्ली
7. हिस्ट्री आफ संस्कृत पोएटिक्स – पी.बी. काणे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
8. काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
9. भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज – राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. ध्वनि सम्प्रदाय और उनके सिद्धान्त – भोलाशंकर व्यास, चौखंभा, वाराणसी
11. भारतीय काव्य विमर्श – राममूर्ति त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
12. भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परम्परा – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी
13. ध्वन्यालोक – आचार्य चण्डिका प्रसाद शुक्ल

अधिगम उद्देश्य

1. आलोचना के प्रारम्भिक भारतीय स्रोतों को जानना।
2. काव्य–आलोचना के सिद्धान्तों के परिवेश को जानना।
3. आलोचना के आदि आचार्यों के अवदान की पड़ताल करना।
4. वाद–विवाद–संवाद की परम्परा का ज्ञान करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. भारतीय आलोचनाशास्त्र का इतिहास जान सकेंगे।
2. काव्यांगों का विवेचन कर सकेंगे।
3. विभिन्न सम्प्रदायों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
4. काव्यास्वाद की प्रक्रिया समझ सकेंगे।

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

द्वितीय सेमेस्टर

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्न पत्र)

HIN-10203-T-EC एवं HIN-10204-T-EC में से किसी एक का चयन करें

HIN-10203-T-EC : तृतीय प्रश्न पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास–भक्तिकाल

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

समय 3 घण्टे

EOSE : 80 अंक

पाठ्यांश :

इकाई 1. क. भक्ति आन्दोलनः सामाजिक–सांस्कृतिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि।

ख. भक्ति आन्दोलन और लोक जागरण।

इकाई 2 क. भक्ति साहित्य एवं सामाजिक समरसता।

ख. भक्तिकाल की सामान्य विशेषताएँ।

ग. प्रमुख निर्गुण संत कवि।

इकाई 3. क. प्रमुख सगुण कवि।

ख निर्गुण एवं सगुण भक्ति की प्रमुख धाराएँ एवं उनकी शाखाएँ।

इकाई 4. क. भारत में सूफीमत का उदय और विकास।

ख. सूफीमत के सिद्धान्त।

ग. हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य ग्रंथ।

घ. सूफी काव्यधारा की सामान्य विशेषताएँ।

अंक विभाजन–

कुल पाँच प्रश्न

प्रत्येक इकाई से एक आलोचनात्मक प्रश्न – कुल चार (आन्तरिक विकल्प देय) 16×4 = 64 अंक

अन्तिम प्रश्न टिप्पणीपरक होगा। किसी भी इकाई से, दो टिप्पणियाँ 8×2 = 16 अंक

(आन्तरिक विकल्प देय)

अनुशंसित ग्रंथ–

1. रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

2 हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

3. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग–एक) वाणी वितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी
4. रामस्वरूप चतुर्वेदी – हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती, इलाहाबाद
5. नलिन विलोचन शर्मा – साहित्य का इतिहास दर्शन, बिहार हिन्दी राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
6. बच्चन सिंह – हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
7. मैनेजर पाण्डेय – साहित्य और इतिहास दृष्टि, पिपुल्स लिटरेसी, दिल्ली
8. त्रिभुवन सिंह – साहित्यिक निबंध
9. भक्ति काव्य और लोक जीवन – शिवकुमार मिश्र
10. भक्ति काव्य की भूमिका – प्रेमशंकर
11. नाथपंथ और संत साहित्य – डॉ. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय
12. हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति – डॉ. श्याम सुन्दर शुक्ल
13. कबीर वाङ्मय : सबद, साखी, रमैनी – डॉ. जयदेव सिंह, डॉ. वासुदेव सिंह
14. भये कबीर कबीर – डॉ. शुकदेव सिंह
15. कबीर एक नई दृष्टि – रघुवंश
16. हिन्दी संतकाव्य–संग्रह – सं. श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद
17. संतों एवं भक्तों का जीवन–चरित – डॉ. विक्रम सिंह राठौड़, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर

अधिगम उद्देश्य

1. भारत के मध्यकाल की सांस्कृतिक उपलब्धियों की जानकारी प्रदान करना।
2. हिन्दी साहित्य के स्वर्णकाल के सामाजिक–सांस्कृतिक आधार को समझना।
3. भक्ति आन्दोलन की विविध धाराओं की पहचान करना।
4. भारत के सूफीमतों का परिचय प्राप्त करना।
5. भक्तिकाल के समन्वयवादी दृष्टिकोण का परिचय प्राप्त करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. भक्ति आन्दोलन के सामाजिक आधारों का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. आधुनिक भारत के उदार एवं मानवीय मूल्यों के स्रोतों की पहचान कर सकेंगे।
3. प्रमुख संत–भक्त–सूफी कवियों की सामाजिक संस्कृति के विकास में प्रमुख भूमिका की पहचान कर सकेंगे।
4. लोकसाहित्य एवं शिष्ट साहित्य के अन्तर्संबंधों को समझ सकेंगे।
5. भक्तिकालीन कवियों के समन्वयवादी दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए. (हिन्दी)

द्वितीय सेमेस्टर

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN-10203-T एवं HIN-10204-T में से किसी एक का चयन करें

HIN-10204-T : तृतीय प्रश्न पत्र

राजस्थान के प्रमुख संत कवि

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

EOSE : 80 अंक

समय 3 घण्टे

पाठ्यांश :

संत काव्य–आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, इलाहाबाद से निम्नांकित पाठ्यांश

इकाई 1. **संत दादूदयाल : पद** – 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, साखी – 1 से 29

इकाई 2. **संत रज्जब : पद** – 1 से 5 तक, साखी – 1 से 35 तक

इकाई 3. **संत सुन्दरदास : पद** – 1 से 4, साखी – 1 से 10

इकाई 4. **(i) संत सहजो बाई : पद** – 1 से 3, साखी 1 से 7 तक

(ii) संत दयाबाई – साखी – (दयाबोध से) 1 से 6 तक **साखी – (विनयमालिका से)** 7 से 12 तक

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएँ– प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय)	8×4 = 32 अंक
आलोचनात्मक प्रश्न कुल चार (आन्तरिक विकल्प देय)	12×4 = 48 अंक

(राजस्थान के प्रमुख संतों से संबंधित एवं निर्धारित प्रत्येक इकाइयों से संबंधित प्रश्न पूछे जायेंगे)

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति – डॉ. श्याम सुन्दर शुक्ल
2. हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय – पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल
3. उत्तरी भारत की संत परम्परा – परशुराम चतुर्वेदी
4. संत अंक (कल्याण) – गीता प्रेस, गोरखपुर
5. सहजो बाई का सहज प्रकाश – वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग
6. सुन्दर ग्रंथावली – सं. हरिनारायण शर्मा
7. संत काव्य – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

8. राजस्थान का सन्त–साहित्य – राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
9. मीराँ, सहजो और दयाबाई – वियोगी हरि
10. संत रज्जब – डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
11. राजस्थानी संत साहित्य – डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
12. दयाबाई की बानी – संतबानी पुस्तकालय, बेलविडियर प्रेस, प्रयाग

अधिगम उद्देश्य–

1. राजस्थान के मध्यकाल के संतों की जानकारी प्रदान करना।
2. राजस्थान की सांस्कृतिक–साहित्यिक उपलब्धियों का ज्ञान करना।
3. राजस्थान के मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का अध्ययन करना।
4. राजस्थान के सामाजिक एवं सांस्कृतिक साहित्य का अध्ययन करना।
5. राजस्थान के मध्यकाल की प्रमुख स्त्री संतों के साहित्य का अध्ययन करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल–

1. राजस्थान में निर्गुण संत काव्य धारा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. विभिन्न संतों के काव्य की अन्तर्धारा को समझ सकेंगे।
3. निर्गुण धारा के सामाजिक आधार को जान सकेंगे।
4. मीराँ के अतिरिक्त राजस्थान के मध्यकाल में स्त्री स्वर का अध्ययन कर सकेंगे।
5. राजस्थान के संतों के बारे में विस्तृत जानकारी कर सकेंगे।

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

द्वितीय सेमेस्टर

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN-10205-T एवं HIN-10206-T में से किसी एक का चयन करें

HIN-10205-T : चतुर्थ प्रश्न पत्र

मीराँ

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

समय 3 घण्टे

EOSE : 80 अंक

पाठ्यांश :

मीराँ पदावली : सं. डॉ. शम्भुसिंह मनोहर, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर से निम्नांकित पाठ्यांश –

इकाई 1.

पद – 1 से 25 तक

इकाई 2.

पद – 26 से 50 तक

इकाई 3.

पद – 51 से 75 तक

इकाई 4.

पद – 76 से 101 तक

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएँ – प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय)	8×4 = 32 अंक
मीराँ की भक्ति भावना, दर्शन, जीवन दृष्टि, काव्य कला आदि के वैशिष्ट्य पर केन्द्रित तीन आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय)	16×3 = 48 अंक

अनुशंसित ग्रंथ–

1. उत्तर भारत की संत परंपरा – परशुराम चतुर्वेदी
2. मीराँ–मंदाकिनी – नरोत्तमदास स्वामी
3. मीराँ–माधुरी – ब्रजरत्नदास
4. मीराँ : एक अध्ययन – पद्मावती शबनम

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

5. मीराँ का काव्य – विश्वनाथ त्रिपाठी
6. मीराँ, सहजो और दयाबाई – वियोगी हरि
7. मीराँ–पदावली – परशुराम चतुर्वेदी
8. मीराँ वृहत–पद–संग्रह – पद्मावती शबनम
9. मीराँ की प्रेम साधना – भुवनेश्वर 'मिश्र' माधव
10. पचरंग चोला पहन सखी री – माधव हाड़ा
11. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया
12. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
13. मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ – सावित्री सिन्हा
14. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास – डॉ. सुमन राजे
15. मीराँ पदावली – डॉ. शम्भु सिंह मनोहर
16. मीराँबाई की सम्पूर्ण पदावली– सं. डॉ. रामकिशोर शर्मा, डॉ. सुजीत कुमार शर्मा

अधिगम उद्देश्य

1. भक्ति आन्दोलन में लैंगिक अभिव्यक्ति का अध्ययन करना।
2. सामंतवाद की चुनौतियों को समझना।
3. राजस्थान के परिवेश का ज्ञान करना।
4. स्त्री रचनाकारों की कविता का शिल्प समझना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. सामन्तवाद और स्त्री विषय की अभिव्यक्ति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. मीराँ के काव्य का अध्ययन कर सकेंगे।
3. स्त्री मन और प्रकृति की पड़ताल कर सकेंगे।
4. मीराँ के काव्य में ज्ञान, भक्ति और समन्वय को समझ सकेंगे।

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अकादमिक प्रथम

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

एम.ए (हिन्दी)

द्वितीय सेमेस्टर

इलेक्टिव कोर कोर्स (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

HIN-10205-T एवं HIN-10206-T में से किसी एक का चयन करें

HIN-10206-T : चतुर्थ प्रश्न पत्र

रसखान

आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

समय 3 घण्टे

EOSE : 80 अंक

पाठ्यांश :

रसखान रचनावली : सं. विद्यानिवास मिश्र, सत्यदेव मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली से निम्नांकित पाठ्यांश

इकाई 1.

सुजान–रसखान : पद – 3, 5, 7, 10, 13, 18, 27, 29, 31, 37, 41, 56, 61, 67, 82, 85, 99, 103, 124, 129, 130, 140, 145, 155, 159, 169, 174, 191, 225, 237, 248, 254

इकाई 2.

दानलीला : पद – 1 से 11 तक

इकाई 3.

(i) **स्फुट पद** : 1 से 5 तक

(ii) **प्रेमवाटिका : दोहा** – 1 से 10 तक

इकाई 4.

प्रेमवाटिका : दोहा – 11 से 53 तक

अंक विभाजन–

चार व्याख्याएँ – प्रत्येक इकाई से एक (आन्तरिक विकल्प देय)	8×4 = 32 अंक
रसखान की भक्ति भावना, दर्शन, जीवन दृष्टि, काव्य कला आदि के वैशिष्ट्य पर केन्द्रित तीन आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय)	16×3 = 48 अंक

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामकुमार वर्मा

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अकादमिक प्रथम

3. हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेम काव्य – गुरुदेव प्रसाद वर्मा
4. रसखान और उनका काव्य – चन्द्रशेखर पाण्डेय
5. रसखान : जीवन और कृतित्व – देवेन्द्र प्रताप उपाध्याय
6. रसखान ग्रंथावली – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
7. रसखान : काव्य तथा भक्ति भावना – डॉ. माजदा असद
8. रसखान पदावली – सं. प्रभुदत्त ब्रह्मचारी
9. रसखान रचनावली – सं. विद्यानिवास मिश्र, सत्यदेव मिश्र

अधिगम उद्देश्य

1. भक्ति साहित्य के विस्तृत फलक का अध्ययन करना।
2 कृष्ण की सांस्कृतिक छवि को समझना।
3. ब्रजभाषा की रसात्मक विशेषताओं का विश्लेषण करना।
4. रसखान की भक्ति के पदों का विद्यार्थियों के लिए अवगत करना।

पाठ्यक्रम प्रतिफल

1. भक्ति आन्दोलन की धर्मनिरपेक्ष प्रकृति को जान सकेंगे।
2 रसखान को सामाजिक प्रतीक के रूप में समझ सकेंगे।
3. प्रेम एवं भक्ति की सामाजिकता को जान सकेंगे।
4. मध्यकालीन काव्य की लोकोन्मुखता समझ सकेंगे।

(प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार गुप्ता)

प्रभारी अकादमिक प्रथम